an>

Title: Need to set up a research centre of AYUSH in Uttarakhand.

डॉ. रमेश पोखरियाल निशंक (हरिद्वार): आयुर्वेद अर्थात आयु का विज्ञान एक शाश्वत चिकित्सा पद्धति है जो न केवल तन को बल्कि मन और मस्तिष्क को स्वस्थ करने की बात करती है। विश्व के 60 प्रतिशत से अधिक लोग पारम्परिक दवाइयों का उपयोग करते हैं। चरकसंहिता और सूश्रुत संहिता के कमशः 341 और 760 पौधों का वर्णन है और मुख्यतः हिमालय ही इनका उद्गम स्थल है। विकसित देशों से 40 प्रतिशत से अधिक लोग जड़ी-बूटी का सेवन करते है। भारत की 70 प्रतिशत से अधिक ग्रामीण जनता आयुर्वेदिक दवाइयों पर निर्भर है। आयुर्वेद की लोकप्रियता पूरे विश्व में लगातार बढ़ रही है। हम सौभाग्यशाली हैं कि प्रकृति ने हमें आयुर्वेद जड़ी-बूटियों का असीम खजाना दिया है। पिछले कुछ वर्षों से आयुष क्षेत्र में 20-25 की विकास दर देखी जो कि अत्यंत उत्साहजनक है। उत्तराखंड देवभूमि होने के साथ पर्यावरण की दृष्टि से अत्यंत संवेदनशील राज्य है। जैव विविधता के क्षेत्र में यह विश्व के श्रेष्ठ स्थानों व हिमालय से घिरा यह प्रदेश 65 प्रतिशत से अधिक वन क्षेत्र से आच्छादित है। ऐसी स्थिति में आयुष संबंधी किसी भी महत्वाकांक्षी योजना के लिए स्वाभाविक केन्द्र है।

आयुर्वेद में संस्कृति की महत्ता के मददेनजर हमने इसे द्वितीय राजभाषा बनाकर प्रदेश और देश का गौरव बढ़ाया। आज हम गर्व से कह सकते हैं कि उत्तराखण्ड ही एकमात्र ऐसा राज्य है जहां संस्कृत को द्वितीय राजभाषा के रूप में स्थापित किया गया है। इस प्रदेश में 15 से अधिक विश्वविद्यालय हैं जिससे यह राज्य शिक्षा के हब के रूप में अपनी पहचान बना चुका है।

मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि उत्तराखंड में आयुष का शोध संस्थान स्थापित करे ताकि उसमें आयुर्वेदिक उत्पादों के आधुनिकतम मापदण्ड स्थापित किए जा सके। मौलिक शोध-उत्पादों पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त मेरा केन्द्र सरकार से अनुरोध है कि प्रस्तावित शोध संस्थान में निम्न विषयों पर गहन शोध कराया जाना चाहिएः-1. वैज्ञानिक शोध प्रणालियां, 2. सार्वजनिक स्वास्थ्य सेवाएं, 3. क्लीनिकल रिसर्च 4. औषध पादप शोध, 5. आयुर्वेद उत्पादों का निर्माण एवं विपणन आदि।